पी–एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध विषय की रूप–रेखा

Synopsis for confirmation of Admission to Ph. D. Programme

शोध विषय का शीर्षक :

‘‘आधुनिक रामकाव्य में रामराज्य का स्वरूप एवं प्रासंगिकता‘‘

हिन्दी विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वर नगर, दरभंगा

शोध–प्रारूप
संकाय–मानविकी
विषय–हिन्दी

पर्यवेक्षक:

डॉ आलोक प्रभात
सहायक प्राध्यापक
महारानी कल्याणी कॉलेज, हिन्दी विभाग,
लहेरियासराय दरभंगा

अनुसंधायिका:

अंजू कुमारी
पैट क्रमांक–22090047

1. शोध परियोजना का शीर्षक :–

"आधुनिक रामकाव्य में रामराज्य का स्वरूप एवं प्रासंगिकता"

2. प्रस्तावना (शोध के मुद्दे/समस्या) :–

भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, साहित्य और लोकजीवन में रामकथा का महत्व सर्वविदित और असंदिग्ध है। आदिकवि वाल्मीकि से लेकर आज तक चली आ रही रामायण परम्परा का गहरा असर भारतीय मानसिकता पर पड़ा है। सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय में रामकथा एक ऐसा उपजीव्य है जो भारत के कोने–कोने से होते हुए विदेशों तक फैला हुआ है। पूरे हिन्दुस्तान में विशेषकर उत्तर भारत अर्थात् हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्रों में रामकथा पर आधारित प्रसिद्ध ग्रंथ 'रामचरितमाानस' काव्य–ग्रंथ से अधिक धार्मिक–ग्रंथ के रूप में स्वीकृत है। इस 'रामचरितमानस'

का यहाँ पूरे भक्ति भाव से पाठ ही नहीं किया जाता है बल्कि इसके मूल्यों का यथासाध्य अपनाने की कोशिश भी की जाती है।

राम भारतीय जनमानस में बतौर नायक उपस्थित हैं। भारत के पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक राम और रामराज्य की महिमा का गान राम को राष्ट्रीय छवि प्रदान करता है। भारतीय राष्ट्रीयता के प्रतीक–पुरूष के रूप में भी उनकी प्रतिष्ठा है। इस प्रतीक को गढ़ने में पारंपरिक रामकथाओं के साथ तुलसीकृत रामचरितमानस की भूमिका अहम रही है। वर्तमान राजनीति के केन्द्र में भी राम की उपस्थिति से इन्कार नहीं किया जा सकता है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद लिखे हिन्दी रामकाव्यों में यह प्रतीक प्रश्नांकित होता है। जनमानस में रचे–बसे राम की आलोचना आधुनिक रामकाव्यों की निजी विशेषता है। शोध

के दरम्यान इस अंतर या फाँक को समझने की कोशिश की जायेगी।

रामकथा में वर्णित सुविधाजनक मूल्यों की चर्चा काफी हुई है। लेकिन असुविधाजनक मूल्यों के विवेचन विश्लेषण में लीपापोती की प्रवृत्ति अधिक हावी रही है। इसका कारण रामकथा तथा उनके कवियों के प्रति भक्ति भाव का प्राधान्य होना है। अगर हम इन राम कथाओं को मात्र एक काव्य ग्रंथ तथा इतिहास का स्रोत मानकर उसका विवेचन विश्लेषण करें तो निश्चित रूप से इन रामकथाओं के माध्यम से तदयुगीन समाज रूपी 'पाठ' को समझने में काफी सहायता मिल सकती है।

भारतीय मानस में रामराज्य एक ऐसा यूटोपिया है जिसे लाने की बराबर काशिश की जाती है : प्रस्तुत शोध का मुख्य मुद्‌दा यह है कि परम्परा से चली आ रही

रामकथा में वर्णित रामराज्य और आधुनिक, समकालीन रामकथा में वर्णित रामराज्य क्या समान राज्य व्यवस्था की बात करता है या दोनों रामकथाओं के रामराज्य एक दूसरे के विपरीत हैं। समस्या यह है कि जब हम आज के संदर्भ में कहते हैं कि रामराज्य आना चाहिए तो वह कौन–सा रामराज्य होना चाहिए?

सवाल यह है कि जब रामकथा के एक से अधिक पाठ है तो फिर रामराज्य के पाठ एक कैसे हो सकते हैं? आशय यह है कि पारम्परिक रामकथाओं में भी भारी विभिन्नताओं के दर्शन होते हैं। दक्षिण भारत की रामकथाएँ, संस्कृत की रामकथाएँ, बौद्ध रामकथाएँ और हिन्दी क्षेत्र की रामकथाओं में पर्याप्त विभिन्नता है। हिन्दी क्षेत्र की रामकथाओं में रामराज्य का जितना आदर्शीकरण किया गया है उतना अन्य क्षेत्र की रामकथाओं में नहीं। शोध में यह

पड़ताल करने की कोशिश कि जाएगी की इन विभिन्नताओं के निहितार्थ क्या–क्या है?

3. पूर्व अध्ययनः

मेरी संक्षिप्त जानकारी में रामकथा और रामराज्य पर तो थोड़े बहुत कार्य हुए हैं किन्तु आधुनिक रामकाव्य/रामकथा पर अभी तक कोई अनुसंधान कार्य नहीं हुआ हैं। यहाँ तक कि विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में भी इस विषय पर एक आध आलेख ही प्रकाशित हो पाये हैं।

4. उद्‌देश्य/महत्व/प्रासंगिकताः

उक्त शोध परियोजना का उद्‌देश्य भारतीय रामकथा का अद्यतन अध्ययन होगा और उसके नैरन्तर्य के कारकों की पहचान हो इस कार्य की प्रासंगिकता सिद्ध करेंगी। उक्त कार्य का महत्व रामराज्य को एक वैचारिक आधार प्रदान करना है। हम सभी जानते हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन

से लेकर आजतक रामराज्य का उपयोग एक राजनीतिक औजार के रूप में किया जाता रहा है। बाबा रामचंद्र ने मानस की रामकथा एवं रामराज्य का उपयोग ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकने में किया। वही महात्मा गाँधी ने स्वतंत्र भारत में बहुजन हिताय के बदले सर्वजन हिताय को रामराज्य के रूप में देखना चाहा। ठीक इसके विपरीत समकालीन राजनीति रामराज्य का उपयोग/दुरूपयोग अन्य अर्थों में भी कर रहा है। कहने की आवश्यकता नहीं कि आधुनिक रामकथाओं में विन्यस्त युगबोध पूर्व की रामकथाओं में विन्यस्त युगबोध को तार–तार कर ध्वस्त कर रहा है। ऐसे में रामराज्य के अवतरण की कल्पना एक भारी द्वंद्व उत्पन्न कर सकता है। शोध परियोजना का महत्व द्वंद्व की पड़ताल कर एक सुस्पष्ट रामराज्य की अवधारणाा को चिह्नित करना है।

5. ज्ञान के क्षेत्र में योगदानः

रामकथा/रामकाव्य में तो ज्ञान का अक्षय भंडार समाहित है ही। इस अध्ययन से भारतीय संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, देशी ज्ञान, देशी अर्थ–व्यवस्था तथा साहित्य के विभिन्न क्षेत्र का ज्ञान स्वाभाविक रूप से होगा ही।

6. अध्ययन क्षेत्रः

उक्त अध्ययन का क्षेत्र स्वतंत्रता आंदोलन के समय से लेकर आज तक हिन्दी में जो रामकथाएँ लिखी गई हैं उसका गंभीर और विस्तृत अध्ययन होगा साथ ही पूर्व में जो रामकथाएँ लिखी गई है उसका संक्षिप्त अध्ययन भी अपेक्षित होगा। इसके अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं विशेषकर मैथिली में जो रामकथाएँ लिखी गई है, उसका अध्ययन भी किया जाएगा। मुख्य रूप से जो आधुनिक रामकथाओं का अध्ययन किया जाएगा, वो इस प्रकार है–

1. साकेत – मैथिलीशरण गुप्त

2. राम की शक्तिपूजा – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

3. संशय की एक रात – नरेश मेहता

4. रामराज्य – कलक्टर सिंह केसरी

5. राम का अंतर द्वंद्व – अरविंद कुमार

6. उत्तर सीताचरित्र – कलक्टर सिंह केसरी

7. भूमिजा – नागार्जुन

8. अग्निलीक – भारतभूषण अग्रवाल

9. शंबूक – जगदीश गुप्त

10. सीता की माँ – रामवृक्ष बेनीपुरी

इसके अतिरिक्त और भी जो आधुनिक रामकथाएँ शोध के अंतराल में प्राप्त होगी उसे भी शामिल किया जाएगा।

7. अध्ययन पद्धति / शोध–प्रविधिः–

प्रस्तावित विषय को उसके निहित उद्देश्य तक पहुँचाने के हेतु एक दिशा की आवश्यकता होती है। शोधकार्य में यह दिशा शोध प्रविधि के रूप में सहायक सिद्ध होती है। प्रस्तुत शोधकार्य को नये आयाम और दिशा देने के लिए जिन प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा वे इस प्रकार है–

(क) आलोचनात्मक शोध प्रविधि

(ख) समाजशास्त्रीय शोध प्रविधि

(ग) तुलनात्मक शोध प्रविधि

सर्वप्रथम विभिन्न भारतीय रामकथाओं का अध्ययन कर प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास से उसका सामांजस्य बैठाने की कोशिश की जाएगी। तत्पश्चात् आधुनिक रामकथाओं का अध्ययन कर पूर्व की रामकथाओं से उसका

तुलनात्मक अध्ययन करने की चेष्टा की जाएगी। कार्यांत में आधुनिक रामकथा में युगबोध की समीक्षा प्रस्तुत की जाएगी।

8. स्रोत सामग्री की उपलब्धता:

प्रस्तावित शोध–कार्य के लिए पुस्तकालयों एवं शैक्षणिक संस्थाओं में प्रचुर साहित्यिक साक्ष्य उपलब्ध है। यथा, ल0ना0मि0वि0 का केंद्रीय पुस्तकालय, सी0एम0 कॉलेज के साथ–साथ नगर के अन्य महाविद्यालयों का पुस्तकालय, नगर स्थिति लक्ष्मेश्वर लाइब्रेरी के समृद्ध भंडार तथा का0सिं0द0 संस्कृत विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं इंटरनेट आदि का उपयोग तथ्यों के वस्तुनिष्ठ आलोचनात्मक विश्लेषण में किया जाएगा।

9. परिकल्पनाः

उक्त शोध परियोजना की परिकल्पना यह है कि जिस रामराज्य को विभिन्न रामकथाओं ने स्वर्णिम राज्य के रूप में स्थापित किया है, उस रामराज्य के प्रति आधुनिक रामकथाओं की दृष्टि अच्छी नहीं है। तात्पर्य यह कि आधुनिक रामकथाएँ रामराज्य को आदर्श राज्य नहीं मानती हैं। आधुनिक रामकथाएँ रामराज्य को लोकतांत्रिक व्यवस्था के सर्वथा प्रतिकूल मानती है। रामराज्य को स्त्री, दलित और श्रमजीवी समुदाय के शोषक के रूप में व्याख्यायित करती हैं। शोध के दरम्यान इस परिकल्पना की सत्यता की जाँच की जाएगी। यह भी जाँचने कोशिश की जाएगी कि इस स्थापना में कितनी वास्तविकता है और कितनी राजनीति प्रेरित। साथ ही आधुनिक रामकथाओं के इस आरोप की पड़ताल भी की जाएगी कि पूर्व की रामकथाओं

में रामराज्य को स्वर्णिम राज्य के रूप में स्थापित करने के पीछे भी राजनीति थी।

10. कार्य–योजनाः

शोध–शीर्ष : आधुनिक रामकाव्य में रामराज्य का स्वरूप एवं प्रासंगिकता

भूमिका :–

अध्याय – एक : **<u>भारतीय रामकथा में रामराज्य का स्वरूप</u>**

(प) वाल्मीकि रामायण में रामराज्य का स्वरूप

(पप) बौद्ध एवं जैन रामायण में रामराज्य का स्वरूप

(पपप) विभिन्न भारतीय भाषाओं में रामराज्य का स्वरूप

(पअ) रामचरितमानस में रामराज्य का स्वरूप

अध्याय – दो : **<u>रामकथा में रामराज्य और कलियुग का पारस्परिक संबंध</u>**

(प) भारतीय परंपरा में रामराज्य के नैरन्तर्य की निहितार्थ

(पप) रामकथा में कलियुग की अवधारणा

(पपप) कलियुग और रामराज्य का द्वंद्व

अध्याय – तीन : **<u>आधुनिक रामकथा विषय–वस्तु की आलोचनात्मक अध्ययन</u>**

(प) छायावाद पूर्व रामकथा

(पप) छायावाद युगीन रामकथा

(पपप) छायावादोत्तर रामकथा

(पअ) समकालीन रामकथा

अध्याय – चार : **<u>रामकथा में रामराज्य का स्वरूप एवं प्रासंगिकता</u>**

(प) गाँधी के रामराज्य और आधुनिक रामकथा में विन्यस्त रामराज्य में समानता एवं विभिन्नता

(पप) पारंपरिक रामकथा के रामराज्य एवं आधुनिक रामकथा के रामराज्य का तुलनात्मक अध्ययन

अध्याय – पाँच : **<u>आधुनिक रामकाव्य में विविध–विमर्श</u>**

(प) आधुनिक रामकथा और स्त्री–विमर्श

(पप) आधुनिक रामकथा और दलित–विमर्श

उपसंहार

11. संदर्भ–ग्रंथ सूची :–

1. वाल्मीकि रामायण – गीता प्रेस गोरखपुर
2. रामचरितमानस – गोस्वामी तुलसीदास, गीता प्रेस गोरखपुर

3. रामकथा – फादर कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय
4. पउमचरिउ – स्वयंभू, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 1970
5. भवभूति ग्रंथावली – लोक भारती प्रकाशन
6. तुलसीदास – मताप्रसाद गुप्त, हिन्दी परिषद प्रयाग विशविद्यालय 1953
7. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य – मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन 1993
8. तुलसी आधुनिक वातायन से – रमेश कुतल मेद्य, ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली
9. तुलसी के काव्य में रामराज्य की परिकल्पना – शीलवती गुप्ता, साहित्य प्रकाशन 1977

10. तुलसीदास का काव्य विवेक और मर्यादाबोध – कमलानंद झा, वाणी प्रकाशन 2017
11. तुलसीदास का स्वप्न और लोक – ज्योतिष जोशी, सेतु प्रकाशन 2021

....
....